भारतीय कला में स्त्री चित्रकारों की भूमिका

डॉ० महेश कुमार
विभागाध्यक्ष
कला विभाग
जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर

अनुपमा ठाकुर
शोधार्थी
ईमेल : anu.tomer196@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० महेश कुमार,
अनुपमा ठाकुर

भारतीय कला में स्त्री चित्रकारों की भूमिका

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 2,
Article No. 16 pp. 118-122

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

समसामयिक चित्रकला के बारे में यह वक्तव्य कहा जा सकता है कि वह कला जो स्वतन्त्र स्वच्छन्द सृजनशील है वह न तो ब्रिटिश कला से प्रभावित है और न ही बंगाल स्कूल से, वह चित्रकला जो आम जन से जुडी है जो यथार्थ से जुडी है समकालीन चित्रकला को आगे बढाने तथा सम्पूर्ण विश्व में भारत का नाम रोशन करने हेतु अनेक चित्रकार इस अविरल नदी में तैर रहे है। जिस प्रकार स्त्रियां सभी क्षेत्रो में आगे बढ रही है, उसी प्रकार कला भी ऐसा क्षेत्र है जहां स्त्रियां आगे बढती जा रही है कला में स्त्रियों की ख्याति का जो सफर अमृता शेरगिल जी से प्रारम्भ हुआ था वह आधुनिक समय में अंजलि इला मेनन, गोगी सरोजपाल, अर्पिता सिंह, भारती खेर, वी0 अनामिका आदि अनेक स्त्री चित्रकारों के अद्भुत कार्यो व अपने कार्य के प्रति समर्पण से बढा चला जा रहा है कला वह क्षेत्र रहा है जहां सदैव ही पुरूषो का वर्चस्व रहा है किन्तु अब ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्त्रियां बहुत तेजी से इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है हम कह सकते हैं कि यह ऐसा समय है जब नारी अपनी बुलंद आवाज के द्वारा अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति हेतु सशक्त माध्यम प्राप्त कर चुकी है। आज कला के सभी क्षेत्रों चाहे वह चित्रकला हो या मूर्तिकला अथवा वास्तुकला इनके अतिरिक्त आधुनिक कला माध्यमों के प्रयोगों में भी स्त्रियां अग्रणी है वर्तमान में कला कार्य में संलग्न महिलाएं देश ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है। उनके कार्यो की प्रशंसा हो रही है।

मुख्य बिन्दु

प्राचीन काल, मध्यकाल, समकालीन, महिला चित्रकार।

प्राचीन समय से ही महिलाओं को कला के क्षेत्र में संघर्षपूर्ण कार्य करना पडता था। कला प्रशिक्षण से चित्राकृति बेचने तक महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पडता था। प्रागैतिहासिक काल के चित्रों पर चित्रकारों का नाम न होने के कारण उस समय के चित्रकारों का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। मध्यकालीन युग और पुर्नजागरण कालीन यूरोप के देशों के के अतिरिक्त और कहीं भी महिला कलाकारों की योग्यता को सामने लाने की ओर किये जानेवाले प्रयासों पर ध्यान नहीं दिया गया था। नारी और कला का सम्बन्ध प्रत्येक युग में रहा है किन्तु राजनैतिक उथल–पुथल व समाज में नारी की बदलती हुई स्थिति के कारण वह भी प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो सका तो कभी अप्रत्यक्ष रूप में गति करता रहा था। ऋग्वैदिक काल में पितृसत्तात्मक सामाजिक संगठन होने पर भी समाज में महिलाओं की प्रतिष्ठा थी। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो यह स्पष्ट कर सके कि इस समय स्त्रियों की स्थिति पुरूषों की अपेक्षा हेय थी। वैदिक काल में पितृसत्तात्मक संगठन होने पर भी महिलाओं को महान प्रतिष्ठा प्राप्त थी धार्मिक कार्यों, सामाजिक व धार्मिक उत्सवों, समारोहों आदि में महिलाएं पुरूषों के साथ समान आसन ग्रहण करती थी। पत्नी के रूप में स्त्रियाँ घर की सम्राज्ञी समझी जाती थी। पुत्र और पुत्री दोनों ही ऋग्वेदिक समाज में समान रूप से शिक्षा व सम्मान प्राप्त करते थे।

वैदिकोत्तर काल से मध्य काल तक महिलाओं की सम्मानीय स्थिति में अत्यधिक बदलाव आया। यद्यपि इस समय वयस्क विवाह होते थे परन्तु बाल विवाह की प्रथा अब प्रचलन में आ गयी। विधवा स्त्रियों को विवाह की आज्ञा न थी। क्षत्रियों में कन्या के अपहरण कर विवाह की प्रथा और राज परिवारों में स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी। समाज में बेमेल विवाह व बहु विवाह प्रथा प्रचलित थी। यद्यपि पूर्व मध्य कालीन समाज में अपेक्षाकृत स्त्रियों का सम्मान और आदर अधिक होता था। उनकी शिक्षा दीक्षा की भी व्यवस्था होती थी। इस समय के जो चित्र प्राप्त हुए हैं उनमें चित्रकारों के नाम का प्रमाणिक उल्लेख नहीं मिलता परन्तु फिर भी कथा ग्रन्थों, काव्य, गीत आदि प्रमाणों से सिद्ध होता है कि जनता की उस समय भी चित्रकला में रूचि रखती थी। केवल राजसी चित्रकार और चित्रकत्रियाँ ही नहीं होती थी बल्कि राजा से प्रजा तक सभी श्रेणी के स्त्री और पुरूषों में चित्रकला का अभ्यास प्रचलित था। भारत में कला का स्वर्णिम युग कहे गये गुप्त काल के बाद यहां चित्रकला का अस्तित्व समाप्त होने लगा था किन्तु इस्लाम के भारत में उदय के साथ–साथ चित्रकला को भी श्वास मिला 15वीं–16वीं शती में राजस्थान में एक ऐसी विशुद्ध शैली का उदय हुआ जिसने चित्रकारों को नवीन दृष्टिकोण व नवीन कार्यशैली प्रदान की यह अपभ्रंश शैली का ही नवीन सस्करण था राजस्थानी शैली के चित्रकारों में भी न केवल पुरूष चित्रकारों जैसे– साहिबराम, रामजीदास, गुलामअली आदि रहे अपितु महिलायें भी इस अमूल्य धरोहर के निर्माण में भागीदार रही परन्तु सामाजिक प्रतिबन्ध के कारण वे अपनी कला पर अपनी पहचान उतनी स्पष्टता से प्रदर्शित नहीं कर सकी जितना पुरूष चित्रकारों को स्वतन्त्रता थी। महिला कलाकारों के परिप्रेक्ष्य से उत्तर मध्यकाल भी सूखा ही रहा क्योंकि महिलाएं चित्रकला केवल घर सजाने अथवा आनन्द प्राप्ति हेतु ही करती थी और यह अधिकार भी केवल उच्च घरानो की स्त्रियों को ही प्राप्त था। इन सभी पाबन्दियों के कारण इस समय भी कोई महिला चित्रकार विख्यात नहीं थी।

समसामयिक भारतीय चित्रकला में स्त्री चित्रकारों की उपस्थिति

समसामयिक भारतीय चित्रकला में स्त्री चित्रकारों की उपस्थिति का ज्ञान सर्वप्रथम अमृता शेरगिल के सृजन कार्य से होता है। अमृता शेरगिल समकालीन चित्रकारों में एक ऐसी कलाकार थी जिन्होनें पूर्व व पाश्चात्य कला के नवीन समन्वय की सम्भावनाओं की कल्पना की थी। अमृता की कलात्मक आंतरिक प्रेरणा भारतीय नारी

हृदय के इर्द–गिर्द घूमती रही। वह नारी की मनोवैज्ञानिक दयनीय दशा को अपनी आंतरिक प्रेरणा व संवेदनीय हृदय के साथ कैनवास पर सषजित कर पायी। अमृता शेरगिल के सृजन कर्म की अभिव्यक्ति में मानवीय भाव, चित्रित पात्रों की असहाय निरीह उदास तथा घुटन भरे दैनिक जीवन का वास्तविक प्रतिबिम्ब है अमृता शेरगिल के चित्र केवल स्वानुभूतियों और अंतः प्रेरणा की ही अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि व्यक्ति तथा समाज के स्थायी संकलित अनुभवों और मूल्यों के संयोजन का प्रतिफल है। अमृता शेरगिल के सृजन कार्य से पहली बार एक ऐसे ढंग से महिला के शरीर को सम्मान दिया गया जो 20वीं शताब्दी से पहले भारत में कभी नहीं दिया गया था। अमृता शेरगिल से प्रेरणा तथा समाज में फैले नारीवाद से साहस प्राप्त कर महिला कलाकारों ने कला जगत में एक आश्चर्यजनक तथा सशक्त उपस्थिति दर्ज करायी जहाँ पिछले सैंकडो वर्षो में केवल गिनी चुनी महिला कलाकारों का नाम कला जगत में सुना गया था पढ़ने को मिला वहाँ आज अनगिनत सफल महिला कलाकारों का भारतीय कला पर स्थापत्य है जो निरन्तर बढता जा रहा है। नारीवादी कला प्रत्येक महिला तथा उसकी पहचान से सम्बन्धित है जो महिला सम्बन्धी चर्चा को वृहद रूप में परिभाषित करती है। यह लेखन ऐसी कला से सम्बन्धित है जो स्त्री की सामाजिक, पारिवारिक एवं आत्मिक द्वन्द्वो का परिणाम है। भारत में स्त्री के पुनर्बल की वृद्धि के लिए स्त्रीलिंग सम्बन्धी विषयों की ओर आज विशेष रूप से समाज का ध्यान आकर्शित किया जा रहा है। नारी शक्ति को परिभाषित करने सम्बन्धित विषयों पर कला सृजन आज हर ओर निरन्तर गतिमान है। सैंकडो वर्षो की लुप्तता व दासता के बाद स्त्री विषय पर सोचने वाले आज विभिन्न विभागों के विद्वान, लेखक फिल्म निर्माता व कलाकार है जो नारी की पहचान, उसकी स्वतन्त्रता के पुनर्निधारण तथा उसकी स्वयं की जागृति को दृढ़ता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वतंत्रता के पश्चात आधुनिक भारतीय कला की एक बडी उपलब्धि महिला कलाकारों की बडी संख्या में उपस्थिति रही है। 1970–80 के दशकों में स्त्री कलाकारों के एक बडे समूह के आगमन से एक विशेष घटना का सूत्रपात हुआ। इस अवधि में महत्वपूर्ण महिला कलाकार कला परिदृश्य में शामिल हुई वैसे कलाकार तो कलाकार होता है और स्त्री–पुरूष कलाकार जैसी कोटियाँ बहुत न्याय संगत नहीं है। पर सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखे तो स्त्री कलाकारों की बडी संख्या में उपस्थिति महत्वपूर्ण हो जाती है। मीरा मुखर्जी, अर्पिता सिंह, अंजली इला मेनन, नलिनी मालिनी, नीलिमा शेख गोगी सरोजपाल, माधवी पारेख, नन्दिनी, रिनी धूमल मीना राय आदि। इस सूची को चित्रकला तथा मूर्तिशिल्प दोनों के सन्दर्भ में और लम्बा किया जा सकता है। राधिका वैध नाथन, पुष्पमाला, शांभवी भारती खरे जैसे युवा कलाकार भी है। निश्चय ही पिछले पचास सालों में कामकाज के अवसर बढे हैं और सामाजिक स्तर पर स्वीकृति की नई स्थितियाँ भी बनी है। सच्चाई यह भी है कि कुछ स्त्री चित्रकारों ने स्वयं इस दौर को अपनी कृतियों में इस तरह से पकडा है जिस प्रकार का सामंजस्य पुरूष कलाकार नहीं कर पाये हैं। 1970 के दशक में भारतीय आधुनिक महिला चित्रकार नलिनी मालिनी ने अपनी अर्न्तदृष्टि से ''वुमन'' सीरीज द्वारा अपना कला कार्य प्रारम्भ किया। अपनी कला के विषय के रूप में वह व्यक्ति के सही स्वरूप को जानने के लिए बहुत आतुर रहती थी। उनकी कला में संघर्षरत स्त्री पतन से उभरने के लिए बेचैन थी। यहाँ तक कि स्त्री की रक्त नलिकाओं को भी देखा जा सकता है।

1970 के दशक में पेशेवर स्त्री चित्रकारों का आगमन हुआ जो अनेक पुरूष कलाकारों से अधिक प्रतिभा सम्पन्न थी। इस समय स्त्री कलाकार हर जगह संगठित थी। समकालीन भारतीय कला में ये भारतीय स्त्रियाँ

प्रतिभाशाली सिद्ध हुई तथा अपनी योग्यता के आधार पर अपने कार्यो के द्वारा उन्हें सम्मान भी प्राप्त हुआ। इसी समय कई बंगाली मूर्तिकार भी भारत में प्रसिद्ध हुई। इनमें मीरा मुखर्जी व मृणालिनी मुखर्जी प्रमुख थी। 80 के दशक के मध्य अनेक भारतीय महिला कलाकारों के आत्मविश्वास में निरन्तर वषद्धि हो रही थी जिसके द्वारा वे अनेकानेक सन्दर्भो को नियन्त्रित करने की दिशा में एक ही प्रकार के भारतीय आधुनिकतावाद की नपी तुली परिभाषा और दर्शनशास्त्र को सोच–समझ कर तोड़ने में सफल रही।

1990 तक आते–आते आधुनिक चित्रकला का यह परिवर्तनशील दौर उच्चता की ओर बढ़ने लगा। इस दशक के आरम्भ से ही महिला कलाकारों ने आधुनिकतावादी दृष्टिकोण अपनाया। सामाजिक परिवर्तन के इस युग में अमूर्त अभिव्यंजनावादी अभिव्यक्ति अधिक दिखाई दी जिससे कलाकारों ने अपने विचारों को रहस्य के पर्दे में रखना अधिक उपयोगी समझा परन्तु ऐसे समय में भी महिला कलाकारों ने आकषतिमूलक कला को ही महत्व दिया।

सन् 1986 में ललित कला अकादमी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानवाधिकार एवं विकास मन्त्रालय, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमेन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से ''भारतीय महिला कलाकार'' शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया निश्चित ही देश में महिला कलाकारों की यह प्रथम विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को एक मंच प्रदान किया गया। इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकषतियों को प्रदर्शित किया गया।

आज हमारे देश में ऐसी बहुत सी महिला कलाकार हैं जिनकी कलाकषतियों ने हमारे भारतीय समाज में महिलाओं को विशेष दर्जा दिलाया है। आज महिलाएं टैक्सटाइल डिजाईनिंग, प्रिन्ट मेकिंग, इन्टीरियर डिजाईनिंग क्ले मॉडलिंग, फैशन व ज्वैलरी डिजाईनिंग में अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही है। इन क्षेत्रों में आगे आयी महिलाओं ने भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी महारथ हासिल किया। आज महिलाओं को नयी पहचान व नयी राह मिली है। आधुनिक समय में भारत में अनेक ऐसी महिला कलाकार हैं जिनकी कलाकृतियाँ कला जगत की अमूल्य निधि के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। बीसवीं सदी की पहली प्रसिद्ध महिला कलाकार टैगोर परिवार की सदस्य थी जिनका नाम सुनयना देवी था। भारत में लगभग स्वतन्त्रता पूर्व के समय टैगोर परिवार में अपने भाईयों के साथ अपनी चित्रकला को रखने का धैर्य दिखाया था सुनयना देवी ने। कई भारतीय महिला चित्रकारों ने भारतीय समस्याओं से सम्बन्धित विशयों के आधार पर अनेक चित्रों की रचना की है। इसके अतिरिक्त कुछ महिला चित्रकार अपनी चित्र प्रदर्शनियों से अर्जित धनराशि का योगदान देश की सांस्कृतिक विरासत को बढाने तथा समाज के हित के लिए योगदान करती है। सन् 1960 के दशक में महिलाओं ने बडी संख्या में कला के क्षेत्र में प्रवेश करना प्रारम्भ किया।

आज भारतीय कला स्कूलों में लगभग आधे से ज्यादा मात्रा में महिलाएं है। भारत में क्यूरेटर, लेखक गैलरी मालिकों में बहुमत आज महिलाएं है। इन अनेक महिला कलाकारो के असीम प्रयासों व अनवरत कार्य से ही कला क्षेत्र में महिलाओं को प्रसिद्धि प्राप्त हो पायी है। वैसे तो आज के समय में इन महिला कलाकारों की संख्या निरन्तर बढती जा रही है। किन्तु अपने इस शोध में मैने कुछ ऐसी महिला कलाकारों के कार्यो कों प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो कला की अपनी–अपनी विधाओं में अत्यन्त निपुण है तथा जिन्होने अपनी कार्यशैली से देश ही नहीं विदेशों में भी ख्याति अर्जित की है इनके कार्य को एक अलग पहचान प्राप्त है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा, अविनाश बहादुर. (2020). भारतीय चित्रकला का इतिहास. प्रकाश बुक डिपोः बरेली।
2. खुराना, के0एल0., चौहान, एस0एस0. (2020). भारतीय इतिहास में महिलाएँ. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
3. Kapoor, Geeta. (1978). Contemporary Indian Artists. Vikas Publication.
4. Farooqi, Anis. (1986). Indian Women Artists. National Gallery of Modern Art.
5. पत्र एवं पत्रिकाएँ।